गोविभा

गोविज्ञान भारती का संदेशवाहक मासिक

वर्ष : 10 ● अंक : 11 | सम्पादक : नरेन्द्र दुबे, डॉ. पुष्पेन्द्र दुबे 20 फरवरी, 2013

व्यापारिक कृषि असफल ही होगी

मासानोबू फुकूओका

व्यापारिक कृषि की अवधारणा जब पहली बार सामने आई तभी मैंने उसका विरोध किया था। जापान में व्यापारिक कृषि किसानों के लिए फायदेमंद नहीं है। व्यापारियों का कायदा यह है कि जब भी कोई वस्तु बेची जानी होती है तो उसकी मूल लागत जो भी हो, उसे कुछ और प्रसंस्करित कर और उसकी लागत बढ़ा कर ही उसे बेचते हैं। लेकिन जापानी खेती में यह मामला इतना सीधा नहीं है। उर्वरक, खाद, उपकरण तथा रसायन उस कीमत पर खरीदे जाते हैं जो बाहर निर्धारित होती है तथा यह बतलाने का कोई तरीका नहीं होता कि इन आयातित उत्पादों का उपयोग करने के बाद वास्तविक लागत क्या बैठेगी? यह सब पूरी तरह व्यापारियों पर निर्भर करता है तथा बिक्री मूल्य भी चूंकि तय किया हुआ रहता है। किसान की आय उन ताकतों की मेहरबानी पर निर्भर हो जाती है, जिन पर उसका कोई नियंत्रण नहीं होता।

सामान्य रूप से व्यापारिक कृषि एक अस्थिर चीज है। किसान की स्थिति तो उसके बगैर ही बेहतर होगी यानी उसे अपनी जरूरत का खाद्यान्न पैसा बनाने के बारे में सोचे बगैर ही पैदा करना चाहिए। यदि आप चावल का एक बीज बोते हैं तो वह एक हजार से भी ज्यादा दाने देता है। शलजम की एक ही कतार बोने से इतना अचार बन जाता है। जो पूरे जाड़े-भर के लिए काफी होता है यदि आप इस ढंग से सोचकर चले तो आपको खाने के लिए पर्याप्त, बल्कि उससे ज्यादा ही मिल जाएगा और उसके लिए ज्यादा संघर्ष भी नहीं करना पड़ेगा मगर यदि आप इसके बदले कुछ पैसा बनाने की कोशिश करते हैं तो आप उस मुनाफा गाड़ी पर सवार हो जाते हैं, जो पता नहीं आपको कहां ले भागेगी।....

पुराने जमाने में केवल चार तरह के लोग होते थे। योद्धा, किसान, कारीगर तथा व्यापारी। किसान को 'ईश्वर का कलशधारी' कहा जाता था क्योंकि वह व्यापारी या निर्माता के बजाए चीजों के स्रोत के सबसे ज्यादा नजदीक होता था वह किसी न किसी तरह निर्वाह कर भी लेता था, और खाने की कम से कम उसे कोई कमी नहीं होती थी।

मगर आज तो हर तरफ पैसा बनाने की भगदड़ मची हुई है। अंगूर, टमाटर तथा तरबूजों की अत्याधुनिक फैशनेबल किस्में उगाई जा रही हैं। उष्ण गृहों में बेमौसम फल-फूल उगाए जा रहे हैं। मत्स्य प्रजनन की शुरुआत हो गई है और मवेशी भी मुनाफा कमाने के लिए ही पाले जाते हैं।

यह सिलसिला बतलाता है कि जब किसान आर्थिक राय झूले पर सवार हो तो क्या होता है ? कीमतों में उतार-चढ़ाव आते हैं, मुनाफा होता है तो घाटा भी होता है।

असफलताओं को आप टाल नहीं पाते। जापान की खेती अपने रास्ते से भटककर पूरी तरह भ्रष्ट हो गई है। वह खेती के बुनियादी सिद्धांतों को त्यागकर धंधा बन गई है।

(अनुवादक हेमचंद्र पहारे : **एक तिनके से आई क्रांति** से साभार)

सम्पादकीय

करुणा और विज्ञान

हाल ही में उत्तर कोरिया ने संयुक्त राष्ट्र संघ और दुनिया की राय के खिलाफ जाकर परमाणु परीक्षण किया। इसके बाद संयुक्त राष्ट्र संघ ने उत्तर कोरिया को इसके गंभीर परिणाम भुगतने की चेतावनी दी है, वहीं अमेरिका ने उत्तर कोरिया के साथ ईरान पर भी कार्रवाई करने के संकेत दिए हैं। जब उत्तर कोरिया ने परमाणु परीक्षण किया, उसके कुछ दिन पूर्व ही मीडिया में यह जानकारी आई कि उत्तर कोरिया में भयंकर अकाल पड़ा है। अकाल से अब तक 10 हजार लोग मारे जा चुके हैं। वहां लोग अपनी क्षुधा शांत करने के लिए अपने बच्चों को खाने लगे हैं। यह मनुष्यता के पतन की पराकाष्ठा है। उधर सीरिया में भी स्थितियां बद से बदतर होती जा रही हैं। वहां शरणार्थियों की तादाद दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। भोजन उपलब्ध कराने वाली एजेंसियों ने अपने हाथ खड़े कर दिए हैं। उनके पास जितने लोगों की मदद करने के लिए रसद थी, उससे कहीं अधिक लोग कतार में खड़े हैं। आखिर दुनिया में इतनी अफरा-तफरी क्यों है ? एक ओर खाद्यान्न के भंडार भरे पड़े हैं तो दूसरी ओर लोगों के पास खाने को दाना तक नहीं है। कपड़ा मिलें दिन-प्रतिदिन लाखों मीटर कपड़े का उत्पादन कर रही हैं, फिर भी लोगों के पास तन ढंकने को कपड़ा नहीं है। सैकड़ों लोग ठण्ड से ठिठुर कर मर रहे हैं। जमीन की हवस बढ़ने से कहीं तो कई एकड़ भूमि पर आलीशान महल खड़े हैं और कहीं पर झोपड़ी भी मयस्सर नहीं है। विज्ञान और तकनीक के विकास से दुनिया में सुख, शांति और समृद्धि बढ़ना चाहिए थी, परंतु इसका विपरीत ही हो रहा है। हमने विज्ञान के क्षेत्र में तीव्र, तीव्रतर और तीव्रतम का सिद्धांत अपनाया है। पूरा जीवन 'स्पीड' या गति पर आधारित हो गया है। समय को मात देकर उससे आगे निकल जाने के विचार ने मनुष्य के मूल विचार करुणा को तिलांजलि दे दी है। भोगवादी संस्कृति में करुणा तत्व दोष के रूप में समझा जा रहा है। यद्यपि प्राकृतिक आपदा के दौरान दुनिया के देश करुणा के वशीभूत होकर ही मदद के लिए दौड़ पड़ते हैं, परंतु यह करुणा तात्कालिक होती है। कई देश उसमें भी अपना नफा-नुकसान देखकर मदद के हाथ बढ़ाते देखे गए हैं। लाभ-हानि के गुणा-भाग में उलझी दुनिया से करुणा तत्व का इस तरह कम होना मनुष्यता के विकास पर प्रश्नचिह्न है। आखिर आज का मनुष्य अपने आप को किस प्रकार सभ्य मान सकता है, जब तक समाज में इतनी असमानता है। इस तथाकथित विकास की रोशनी उस अंतिम व्यक्ति तक नहीं पहुंच रही है जो सर्वाधिक वंचित है। दुनिया में चल रही हथियारों की होड़ ने ही लोगों के मुंह से निवाला छीना है, शिक्षा के अधिकार से वंचित किया है। अपनी सुरक्षा के लिए हथियारों के जखीरे बढ़ाते जाने का मतलब ही है ईश्वर पर विश्वास कम होना। आज दुनिया को करुणा के विचार को गहराई में उतारने के लिए एक जोरदार वैचारिक धक्के की जरूरत है। यह विचार मालकियत विसर्जन का हो सकता है। मालिकपने ने दुनिया का कभी भला किया होगा। वह कभी विकास के लिए जरूरी रहा होगा, परंतु आज मालकियत विसर्जन के विचार को व्यवहार में लाकर ग्राम से लेकर दुनिया में शांति स्थापित की जा सकती है।

- डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

बाबा खुद एक सैलाब है

जब हम कश्मीरवादी में पहुंचे थे, तब एक बहुत बड़ा सैलाब वहां आया था। बारिश अगर दो दिन और होती, तो पूरी कश्मीरवादी डूब जाती। इतना जोरदार सैलाब था। वहां हम हिमालय लांघकर पहुंचे थे, जहां से महमूद गजनी को वापस लौटना पड़ा था। हिमालय की पीरपंजाल नाम की जो रेंज है, वहां तक वह पहुंचा था। वहां से ऊपर जाना पड़ता था। महमूद गजनी का बहुत सख्त मुकाबला वहां के लोगों ने किया। सामने बरफ से ढंका पहाड़ था। वहां हम भी दो-चार दिन रुके और फिर वह पहाड़ लांघकर हम कश्मीरवादी में गये। उस सैलाब को वहां के लोग 'तूफाने नूह' कहते थे। नूह की जमीन में जो जोरदार तूफान हुआ, उससे जल-प्रलय हुआ और पृथ्वी का हिस्सा जलमय हो गया। उससे सारे मानव मिट गये थे। ऐसी कहानी वहां के लोग सुनाते हैं। यहां मनु नाम से इस कहानी का जिक्र किया जाता है। कश्मीरवादी के लोगों से मैंने कहा, : देखो मेरे प्यारे भाइयों, तुम 'नूह' को कबूल करते हो कि तूफाने नूह को ? तुम्हारे सामने यही सवाल है। पैगम्बर को नूह कहते हैं। वह कहते थे कि यह दुनिया फानी है, चंदि दिनों की है। इसलिए बांट लो। आपके सामने एक मसला पेश है। इसलिए आपस-आपस में बांट लो। लोग मुझे कहते थे कि बाबा आया और सैलाब भी आया, तो एक अपशकुन जैसा हुआ है। हमने कहा : बाबा खुद एक सैलाब है। तो उसके सामने दूसरे सैलाब की क्या कीमत है ? आपके प्रदेश में सैलाब आया है। वह कह रहा है कि मिल्कियत मत रखो, मिटा दो यह मिल्कियत। यह सैलाब सिखा रहा है। वह सबको समान बना रहा है। उसने सब खेतों में समान पानी भर दिया है। आपके सारे खेत डूब गये हैं। इसलिए अलग-अलग मिल्कियत को पकड़े मत रहो। इन्दौर 9-8-1960

विदेशों में अहिंसा की परंपराएँ

- मार्जरी साइक्स

(बहन मार्जरी साइक्स ने वर्षो भारत में रहकर प्रेम और अहिंसा के तत्वों को सर्वशक्तिमान मानकर सेवाकार्य किया। धर्म, इतिहास और शिक्षा में उनकी स्वाभाविक गति थी। इसके अतिरिक्त उन्हें गांधीजी का सान्निध्य सुलभ रहा। उन्होंने विदेशों में अहिंसा की परंपरा को सफलतापूर्वक रखा। श्री भवानीप्रसाद मिश्र और डॉ.विश्वनाथ टण्डन के योगदान से गांधी स्मारक निधि ने इसे सन् 1973 में प्रकाशित किया। इसे हम यहां पर दे रहे हैं)

यूरोप में और उसके बाद उत्तरी अमेरिका में अहिंसा की परंपरा के दो स्रोत हैं। एक है प्राचीन यूनानी सभ्यता और दूसरा है सेमेटिक धार्मिक संस्कृति जिसकी झलक यहूदियों के धर्मशास्त्रों में मिलती है और जिसका बाद में ईसा के उपदेशों में विकास हुआ। यहूदी धर्मशास्त्र ईसाइयों में पुराना धर्मनियम (ओल्ड टेस्टामेंट) नाम से प्रचलित है और ईसामसीह तथा उनके प्रारंभिक अनुयायियों के उपदेश नये धर्मनियम (नया करार या न्यू टेस्टामेंट) के द्वारा जाने जाते हैं। ईसा के जन्म के पूर्व की दो शताब्दियों के दौरान उनकी मातृभूमि फिलिस्तीन, जो आज इजराइल के नाम से जाती है, यूनानी सभ्यता से प्रभावित थी और उस पर रोम के लोगों का कैंजा भी हो गया था। वहां की आम भाषा ग्रीक बन गयी थी। न्यू टेस्टामेंट में, जो मूल रूप से यूनानी भाषा में लिखा गया था, ग्रीक और यहूदी दोनों विचार पाये जाते हैं।

ईसा के आने के बहुत पहले ही लोग 'सबके सार्वभौम हित की वृद्धि' की बात सोचने लगे थे। इस दिशा में सोचने वाले सबसे पहले जिस विचारक का नाम हम जानते हैं वह मिश्र देश का एक तरुण शासक अखनातन था। यह ईसा से कोई 14 शताब्दी पहले हुआ था। 'जब सारी दुनिया में युद्ध का शोर था उस समय उसने पहली बार शांति की बात कही। उसने सैनिक शक्ति की महत्ता को विचारपूर्वक तुच्छ माना, उसकी कीर्ति को नगण्य। वह पहला आदमी हुआ जिसने सादगी, प्रामाणिकता, खुलेपन और सौहार्द्र का महत्व लोगों के सामने रखा और यह सब उसने राजा के पद से किया।'

अखनातन के बाद हमें सार्वभौम सामान्य हित को अहिंसक पद्धति से बढ़ाने के प्रयत्नों का कोई प्रमाण 700 वर्षो तक नहीं मिलता। इस काल के बाद हम उस महान् युग में आ पहुंचते हैं जब अनेक देशों में प्रतिभा-संपन्न व्यक्तियों ने अहिंसा का उपदेश लोगों को दिया। भारत में महावीर और गौतम बुद्ध का नाम हम जानते ही हैं। इसी युग में चीन, फिलिस्तीन और यूनान में भी विचारक समाज में व्याप्त हिंसा की समस्या पर सोच और लिख रहे थे।

चीन : लाओत्से ने 'ताओ' का प्रचार किया, जिसे हम अपनी भाषा में 'धर्मपथ' कह सकते हैं। उसने लिखा है, 'जो धर्मपथ का अनुसरण करते हुए मानवीय शासक की सहायता करता है, वह लोगों को अनुशासित रखने में शस्त्र का उपयोग नहीं करता.....जो मानव-जीवन का नाश करने में आनंद का अनुभव करता है वह संसार में कोई भी सत्ता प्राप्त करने योग्य नहीं है।'

लाओत्से के कोई सौ वर्ष बाद मो त्से आया और उसने उन शासकों से जो एक-दूसरे को युद्ध में धमकी दिया करते थे बातचीत करने के लिए लम्बी-लम्बी यात्राएं कीं और उन्हें शांति बनाये रखने के लिए भरसक समझाया। उसका तर्क सादा और स्पष्ट होता था, ''मान लीजिए, कोई आदमी किसी दूसरे के बगीचे में घुस जाता है और उसके फल चुराता है, जब लोग इस बात को सुनते हैं तो उसकी बुराई करते हैं, और अधिकारीगण उसे दण्ड देते हैं। ऐसा क्यों होता है ? क्योंकि वह अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि पहुंचाता है। जहां तक सुअर, चूजे, घोड़े और बैलों को चुराने तथा निरपराधियों को अपने लाभ के लिए मार डालने का सवाल है, सभी जानते हैं कि अमानवीय, अनुचित और आपराधिक होने के कारण इन कामों की निंदा होनी चाहिए, किंतु जब एक अधिक बड़े पैमाने पर एक राज्य दूसरे राज्य को हानि पहुंचाता है, तब लोगों की समझ में नहीं आता कि उन कार्यो की निंदा करें या नहीं। जब छोटा अपराध किया जाता है तब तो लोग जानते हैं कि उसकी निंदा होनी चाहिए, किंतु जब दूसरे राज्य पर आक्रमण जैसा बड़ा अपराध किया जाता है तब लोग नहीं जानते कि उसकी भर्त्सना करनी चाहिए। ऐसे लोगों को उन आदमियों में गिना जाना चाहिए जो काजल की एक रेखा को कालिमा कहकर उसकी निंदा करते हैं किंतु आकाश भर में व्याप्त कालिमा को कोई स्वच्छ और चमकदार चीज कहते नहीं हिचकते।' चीन के कुछ प्राचीन शासकों ने इस प्रकार के उपदेशों का अनुसरण किया था। सम्राट वेन-ती का एक पत्र प्राप्त है जो उन्होंने हियांगनाऊ के सरदार को लिखा था। हियांगनाऊ ऐसा कबीला था जो जंगली स्वभाव का था और जो चीन की बड़ी दीवार के पार बसता था। उसने संधि को तोड़कर सम्राट वेन-ती के राज्य क्षेत्र पर हमला किया था। सम्राट वेन-ती ने लिखा था : 'बड़ी दीवार के उत्तर में वह भूमि भाग है जहां आप राज्य करते हैं, उसके दक्षिण

में वह जन-समुदाय बसा हुआ है जिस पर मैं शासन करता हूं और वह मेरी प्रजा है।

'मैं चाहता हूं कि सभी लोग शांतिपूर्वक रहें। हमको अपनी सेनाएं तोड़ने और अपनी तलवारों को गला डालने का प्रयास करना चाहिए। हमारी कोशिश होनी चाहिए कि बूढ़ों को आराम दें और बच्चों को इस प्रकार पाल-पोसकर बड़ा करें कि बड़े हों और प्रसन्नचित्त हों।'

'आपका देश दीवार से बहुत दूर उत्तर में बसा हुआ है। इसलिए शीघ्र ही आप बहुत शीत का अनुभव करेंगे। इसलिए मैं आपके पास रेशम और कपास के कपड़े शरीर का गरम रखने के लिए और खाने के लिए गेहूं और चावल भेज रहा हूं। हम लोग आज से मित्र हुए। हमारी प्रजा को इससे बड़ी प्रसन्नता है। हम सोचकर देखें कि यह फैला हुआ आकाश हम सबके सिर पर समान रूप से छाया करता है और यह विशाल पृथ्वी हम सभी को बच्चे की तरह गोद में लिए हुए है। हम सब एक ही कुटुम्ब के हैं।

'हमारी इच्छा है कि विश्व में सदा शांति बनी रहे।'

यहूदी : जिस काल में चीन में ये घटनाएं हो रही थीं, लगभग उसी काल में यहूदी धर्मशास्त्र रचे जा रहे थे। ओल्डटेस्टामेंट (पुराना धर्म नियम) में संग्रहीत उपदेश उसी भावना को व्यक्त करते हैं जो हमें सम्राट वेन-ती के पत्र में दिखाई देती है। 'यदि तुम्हारा शत्रु भूखा है तो उसे खाने के लिए रोटी दो, यदि वह प्यासा है तो उसे पीने के लिए पानी दो।' (नीति वचन 25-21) यदि शत्रु का बैल या गदहा भटकता हुआ तुम्हें मिले तो उसे उसके पास अवश्य पहुंचा देना।' (निर्गमन 23-4)

कुछ प्राचीन अत्युत्तम कहानियों में हम यहूदी वीरों को अहिंसा का पालन करते हुए देखते हैं। इब्राहीम, जो यहूदियों के राष्ट्रपिता कहे जाते हैं, इसी प्रकार के एक वीर पुरुष थे। उन्होंने अपने भतीजे लूत से पशुओं को चराने के बारे में झगड़ा बचाने का प्रयत्न किया था। इब्राहीम ने कहा, 'मेरे और तुम्हारे बीच, मेरे और तुम्हारे चरवाहों के बीच कोई झगड़ा न होने पाये। तुम पहले भूमि चुन लो। यदि तुम बायीं ओर जाओगे तो मैं दाहिनी दिशा में जाऊंगा। यदि तुम दाहिनी ओर जाना पसंद करोगे तो मैं बायीं ओर जाऊंगा।' (उत्पत्ति 13: 8-9) अपने पिता इब्राहीम की तरह इसहाक ने भी कुओं के मामले को लेकर दूसरी कौमों के साथ लड़ने से इनकार कर दिया था। इसहाक के दासों ने घाटी में खुदाई की और उनको एक कुएं में पानी मिला। गरार के आदमियों ने कहा कि 'पानी हमारा है'। फिर उन्होंने दूसरा कुआं खोदा और उसके बारे में भी गरार के आदमियों ने वैसा ही दावा किया। फिर वह दूर चले गये और वहां फिर खोदा। इस बार झगड़ा नहीं हुआ और इसहाक ने कहा, 'ईश्वर ने हम दोनों के लिए स्थान की व्यवस्था की है।'(उत्पत्ति 26 : 19-22)

बाद में राष्ट्र के शत्रुओं के मुकाबले में भी अवसर पड़ने पर अहिंसा के इसी सिद्धांत को काम में लाया गया। एक बार सीरिया से युद्ध होने पर इजराइल के राजा ने सीरियाई सेना के एक दल को बंदी बना लिया था। उसने पैगम्बर एलीशा से पूछा कि क्या इन युद्धबंदियों को मार डाला जाए। एलीशा ने कहा, 'नहीं। इसके बदले उन्हें खाने-पीने को दो और उसके बाद उनको उनके मालिक के पास वापस भेज दो।' इस पर बादशाह ने बहुत भोजन कराया और जब वे खा चुके तो उनको वापस कर दिया। गाथा के अनुसार, 'इससे सीरियाई लोगों ने इजराइल पर छापा मारना बंद कर दिया।' (किंग्स (दो) 6: 21-23)

कोई 600 ई.पूर्व में जब यहूदियों की अत्यंत छोटी जमात पर बेबीलोन जैसे विशाल सैनिक साम्राज्य ने हमला करने का इरादा किया तो यहूदियों ने शस्त्रों के सहारे अपना बचाव करने की कोशिश नहीं की। उसके स्थान पर अपने धर्म-प्राण राजा के मार्गदर्शन में वे राष्ट्रीय जीवन को सुधारने और शुद्ध करने में जुट गये, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि केवल भगवान पर विश्वास ही उनकी रक्षा कर सकता है। यदि वे आक्रमणकारियों का सामना शस्त्रबल से करना चाहते, तो संभवत: उनकी पूरी जमात की जमात नेस्त-नाबूद हो जाती। किंतु हुआ यह कि बेबीलोन के आक्रमणकारी अत्यंत ही दरिद्र लोगों को छोड़कर अन्य सबको बेबीलोन लेते गये। किंतु वे मरे नहीं और कालांतर में लौट भी आये। इन्हीं लोगों ने संसार को अपने गौरवशाली धर्मग्रंथ तथा बाद में ईसाई धर्म दिया।

अहिंसक समाज के सपनों को चित्रित करनेवाले श्रेष्ठ वचनों में गिने जाने योग्य पैगम्बर कवि यशायाह का एक वचन है :

'प्रभु का वचन जेरुसलम में फैलेगा,
और वह जाति-जाति के बीच न्याय करेगा,
और वे अपनी तलवारों को पीटकर उनका हल बनाएंगे
और अपने भालों को हंसिया,
एक जाति दूसरी जाति के खिलाफ तलवार न उठायेगी,
और न वे अब युद्ध ही सीखेंगे,.....
मेरे पवित्र पहाड़ पर वे न चोट पहुंचायेंगे और न नाश करेंगे,
क्योंकि जैसे समुद्र जल से भरपूर है,
वैसे ही पृथ्वी भी प्रभु के ज्ञान से भरी हुई होगी।'

(यशायाह 2 : 3-4, 11:9)

पत्र संपदा 3-2-1982

सत्याग्रह चल रहा है

पूज्य बाबा,

सादर प्रणाम!

सत्याग्रह चल रहा है। पहले रोज एक टुकड़ी सत्याग्रह के लिए भेजते थे। अब चार टुकड़ियां भेजते हैं। उनमें कभी तीन गिरफ्तार होती हैं। कभी दो गिरफ्तार होती है। जिस दिन चार टुकड़ियां गिरफ्तार होती है, उस दिन पांच टुकड़ियां भी भेजते हैं। बैलों को कसाईखाने में जाने से रोकते ही सत्याग्रही गिरफ्तार किये जाकर वहां से हटाये जाते हैं। बैलों को कसाईखाने में प्रवेश ही न होने पाये, यह तो प्रयत्न हो नहीं सकता। गिरफ्तार यही एक कार्यक्रम हमारे बस का है। हम जितने भी भेजेंगे गिरफ्तार किए जाएंगे और वहां से हटाये जाएंगे। रात के दो बजे से छः बजे तक टुकड़ी भेजने का इंतजाम हम नहीं कर पाये हैं बाकी बीस घंटे हमने व्याप लिए हैं और उनके बीच में पकड़े जाते हैं। रात की टोली अवश्य पकड़ी जाती है। 6 से 10, 10 से 8, 2 से 8 और 8 से 2 रात इस प्रकार चार टुकड़ियां हैं। इसमें 2 से 8 तक टुकड़ी कभी पकड़ी जाती है, कभी नहीं भी पकड़ी जाती है। दो तो पकड़ी जाती हैं। कभी तीन चार। रात के 2 से सवेरे 6 तक का इंतेजाम हम नहीं कर पा रहे हैं, क्योंकि देवनार से निकट कोई घर जहां रहने, नित्यकर्म की सुविधा हो, हमें नहीं मिल रहा है। यदि ऐसी सुविधा हो तो उस टोली का भी प्रबंध करने की बात हम सोचेंगे। गिरफ्तारी कर लेने का एक और कार्यक्रम सोचा जा रहा है। बैलों को स्टेशन से कतलखाने जाने के रास्ते पर रोकना। उससे भी बैल रोके नहीं जा सकेंगे। पर अधिक लोग पकड़े जायेंगे। पकड़ने के बाद पुलिस कुछ घंटों में ही सत्याग्रहियों को छोड़ देती है। इसलिए सभी के धीरज की कसौटी हो रही है। परंतु करीब-करीब सभी भेजे हुए लोग आये हैं और जो आते हैं वे उत्साहित रहते हैं।

2. बंबई में प्रचार जारी है। पत्रक हजारों से बंटे, जगह-जगह पोस्टर लगे। बैनर लगे और लगाये जा रहे हैं। पत्रक बांटना सतत जारी है। अलग-अलग प्रतिनिधियों से, संस्थाओं से संपर्क किया जा रहा है।

3. पाटिल साहेब (रामकृष्ण) आये थे। उन्हें देवनार पहले दिन दूर से दिखाया। दूसरे दिन अंदल ले गये। वहां के डेपुटी मैनेजर से बातें कीं। घूमाकर बैल दिखाये। पहले दिन जो अनुमान था वह दूसरे दिन प्रत्यक्ष प्रमाण हो गया। बैल के बारे में सरकार कानून पालती नहीं, इस विषय में पाटिल साहब को पूरा यकीन हो गया। तीसरे दिन वे जानवरों को पास करने वाले डॉक्टरों के प्रमुखों को मिले। उन्होंने अपनी बात संवारने की लचर कोशिश की परंतु पाटिल साहब ने वहां मानो रुद्रावतार ही धारण किया था। कहा अपराधी मनुष्य को भी बेनिफिट ऑफ डाउट मिलता है आपने कभी बैल को बेनिफिट ऑफ डाउट दिया है। एक प्रतिशत ही केवल बैल कटने के नाकाबिल साबित हुए हैं। केवल एक प्रतिशत और आज मेरी आंखों ने वहां कितने-कितने खेती के योग्य बैल देखे। मैं किसान हूं। बचपन से बैलों को देखते आया हूं। उसमें से एक ने कहने की कोशिश की कि हमारी जांच टीम होती है यह हम आपको वहां जाकर दिखायेंगे। पाटिल साहब ने कहा अभी चलें। मैंने कहा शास्त्रीय बातें हों तो हम भी एक शास्त्री आदमी को ले आयें। तब उन लोगों ने आनाकानी की और वहां जाने की बात रह गयी। हायकोर्ट में एक केस दर्ज है, उसमें इन लोगों का पर्दाफाश होगा, इस बारे में भी पाटिल साहब को कुछ यकीन-सा हो गया है। यह कानून पाला नहीं जा रहा है इसलिए पाला जा सके, इस बात के लिए कौन-सी बातें की जा सकती हैं, इस बारे में वे सोच रहे हैं। उन्होंने कुछ लिख भी रखा है। मैंने पाटिल साहब को कहा बैलों की रक्षा का कानून अमल में नहीं आ रहा है, इस बारे में आपका मेरा एक मत है। मेरा यह भी मानना है कि यह कानून अमल में आने लायक इम्प्लेमेंटेबल नहीं है। उन्होंने कहा, वह बात आपको सिद्ध करनी होगी। मैंने उन्हें कहा, उस पर एक बयान हम आपको देंगे। तुलसीदास जी विश्राम को कागजात तैयार करने के लिए कहा है। वे तैयार होने पर मैं उन्हें देख लूंगा और पाटिल साहब को भेज दूंगा। कानून लागू नहीं होता, इस विषय में निर्मला ताई को भी यकीन हो गया है। इस बारे में क्या किया जा सकता है, यह बात उन्होंने पाटिल साहब से मालूम करनी चाही है। यहां उनकी थोड़ी देर भेंट हुई। शायद बाद में मिलेंगे। मैंने अपनी बात निर्मला ताई से भी कही है जैसे कि पाटिल साहब से कही है। मैंने पाटिल साहब से निजी तौर पर यह भी कहा कि सरकार को बात तो बाबा से करनी ही पड़ेगी परंतु मानो सरकार ने यहां बैल काटना तुरंत बंद कर दिया और एक कमीशन बिठाये जो अपना निर्णय महीने दो महीने के अंदर दे। वह जहां-जहां से जानवर आते हैं, वहां के लोगों की गवाह ले तो वह भी इस नतीजे पर आयेगी कि बैलों के संरक्षण का कानून पाला नहीं जा सकता। इम्प्लिमेंटेबल नहीं है। जो स्थिति गाय की है असुरक्षित, वही बैल की भी है। अच्छे दाम मिलने पर किसान उत्तम से उत्तम बैल भी किसान बेचता है। वह अपना खेत भी इस तरह बेचता है और कभी-कभी अपने आप को भी बेच देता है।

थोड़ा सा कर्ज लेकर उसे अदा करने में श्रीमानों के घर जिंदगी भर नौकरी करता है।

4 निर्मला ताई ने कहा चलो मुख्यमंत्री से मिलेंगे। मैंने कहा वे कानून मंत्री थे तब यों ही मिलने का प्रयत्न किया था। सत्याग्रह के पहले परंतु भेंट हो नहीं पायी। बाबा के दर्शन के लिए वे गये थे, सुना, इसलिए जानना चाहता था पर भेंट हुई नहीं। निर्मला ताई ने कहा, पर अब मिलने में कोई हर्ज है क्या ? मैंने कहा मिलने में हर्ज नहीं परंतु पहले मिलना चाहता था तब भेंट नहीं हुई, इसलिए अब आया हूं, ऐसी हैसियत से मिलेंगे। बिना पहले समय लिये गये। कहा, आपसे उस समय मिलना था, हुआ नहीं, अब आया हूं मै। यह कह रहा हूं। उन्होंने कहा मैंने अभी फाइल देखी नहीं है। मुझसे हो सके वह करूंगा। गोब्राह्मण प्रतिपालक मेरा अटक है यह भी कहा। मैंने कहा गोब्राह्मण का अर्थ है विज्ञान और आत्मज्ञान इसका रक्षण करना तो आज के जमाने का अतीव आवश्यक काम है। निर्मला ने वर्धा जिले के 'गांधी जिले' की बात निकाली। तो बाबा साहब भोंसले कहने लगे, वहां कुछ गांधीजी की दृष्टि से सोचा जा रहा है, ऐसा दीखता नहीं। किशारेलाल जी, कुमारप्पा जी ने बहुत कुछ कह रखा है। निर्मला ने कहा, मैं कह तो रही हूं पर उसके लिए कुछ करना होगा। मैंने कहा डॉ.स्वामीनाथन् कहते हैं, सुना कि दरिद्र रेखा के नीचे लोगों तक यदि हम कुछ लाभ पहुंचा सके, उनकी स्थिति कुछ सुधरी तो उसे हम मिनिमम गांधी विचार मानें। उन्होंने कहा, बात तो ठीक है। उन्होंने कहा बाबा के आशीर्वाद प्राप्त करने मुझे पवानार जाना है, परंतु उस समय निर्मला वहां रहे तो अच्छा है, निर्मला ने कहा मैं आउंगी। मेरे साथ अण्णा जाधव थे। उनका परिचय दिया। कुसुम कांबळी भी निर्मला ताई के साथ थीं। जिलों में भी गायें कटती हैं देवनार में बैल कटते हैं महाराष्ट्र सरकार के अच्छे सर्कुलर के बाद भी कटती हैं, यह बात भी मैंने भोंसले जी से कही थी। उन्होंने अपने सेक्रेटरी से कहा, ये सारी फाइल मेरे सामने रखें, यह काम मुझे करना है। मैं किसी अपेक्षा से गया ही नहीं था। भेंट समाप्त कर नमस्कार कर चले आया।

5 बंबई के बड़े-बड़े लोगों के हस्ताक्षर से एक बयान एक-दो दिन में प्रकट होगा। देवनार सत्याग्रह से हम सहमत हैं। बंबई के लोगों से आर्थिक सहायता की अपील है।

6 रामकृष्ण जी चेंबर्स ऑफ कॉमर्स की सभा में गये थे। वहां उनकी शंकरराव चव्हाण से भेंट हुई। उन्होंने सत्याग्रह की बात रामकृष्ण जी से बात करते हुए निकाली। रामकृष्ण जी ने उन्हें सारी बात समझायी। शंकरराव उन्हें बाबा साहब भोंसले मुख्यमंत्री के पास ले गये। वे भी वहीं उपस्थित थे ही। उन्होंने रामकृष्ण जी से कहा, में अभी-अभी मुख्यमंत्री हुआ हूं। मुझे इस विषय में जानकारी चाहिए। रामकृष्ण जी ने कहा मैं आपके पास जानकारी भिजवाऊँगा। रामकृष्ण जी ने तुलसीदास जी से उन्हें मिलने को कहा। तुलसीदास जी ने मुझे पूछा। मैंने कहा आप जरूर मिलें। आपकी भूमिका बिचोलिये की भी हो सकती है। हम मुलाकात मांगेंगे नहीं। क्योंकि बात तो किसी को भी बाबा से ही करनी होगी। आप उनसे मिलो। बात करें, गंभीरता समझायें। उन्होंने पत्र लिखा और भेंट मांगी। रामकृष्ण जी का जिक्र अखबारों में भी आ गया है। बाबा साहब भोंसले से मेरी सहज भेंट हुई। वह बात मैंने तुलसीदास जी से कह दी। उन्हें भी समय मुख्यमंत्री से मिलने पर उनसे मिलना है। मिलेंगे। काम तो दिल्ली से होगा। परमात्मा ही करेगा। **-अच्युत देशपाण्डे**

घोषणा-पत्र

फॉर्म-4

(नियम 8 को देखिए)

गोविभा

प्रकाशन का स्थान	:	डी-37, सुदामानगर इन्दौर-452 009
प्रकाशन अवधि	:	मासिक
मुद्रक का नाम	:	नरेन्द्र दुबे
नागरिकता	:	भारतीय
पता	:	डी-37, सुदामानगर इन्दौर-452 009
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	डी-37, सुदामानगर इन्दौर-452 009
मुद्रक का नाम	:	श्रीकृति ग्राफिक्स बी-133, सुदामानगर इन्दौर-452 009
स्वामित्व	:	गोविज्ञान भारती द्वारा मुंबई सर्वोदय मण्डल 299, ताड़देव रोड मुंबई-400 007

मैं नरेन्द्र दुबे कार्याध्यक्ष गोविज्ञान भारती एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य है।

नरेन्द्र दुबे

दिनांक : 20 मार्च, 2013 प्रकाशक के हस्ताक्षर

प्रेरक कहानियाँ

श्रद्धावान लभते ज्ञानम्

एक बार यूनानी सम्राट मिलिंद ने महाज्ञानी भदंत नागसेन से पूछा, ''कहते हैं कि श्रद्धा से ज्ञान की प्राप्ति होती है, परंतु श्रद्धा की क्या पहचान है ?

नागसेन ने उत्तर दिया, ''श्रद्धा की पहचान दो प्रकार से की जाती है - इससे एक तो मन में प्रसन्नता और साथ ही महती आकांक्षा उत्पन्न होती है।''

मिलिंद ने फिर पूछा, ''भंते! मन में प्रसन्नता उत्पन्न कर देना भला श्रद्धा की पहचान कैसे हो सकती है ?

नागसेन ने समझाया, ''महाराज! जब श्रद्धा पैदा होती है, तो वह मार्ग की समस्त बाधाओं को दूर कर देती है और इससे चित्त निर्मल, आनंदित और मुक्त हो जाता है। इसलिए महाराज 'चित्त में आनंद होना' यही श्रद्धा की पहचान है।''

राजा ने आग्रहपूर्वक कहा, ''महाराज! कल्पना कीजिए कि कोई चक्रवर्ती राजा अपनी चतुरंगिणी सेना के साथ जाते हुए रास्ते में छिछली नदी को पार कर रहा हो और उनके चलने से नदी का पानी गंदला हो जाए। यदि उसी समय राजा अपने किसी सेवक से पीने के लिए पानी मांगे, तो सेवक को वह गंदला जल देने की हिम्मत नहीं होगी। परंतु राजा यदि उस सेवक को जल में मणि डालने का आदेश दे, तो जल स्वच्छ हो जाता है। अब समझ लो कि पानी हमारा चित्त है, सेवक योगी पुरुष है, जल का गंदलापन चित्त के क्लेष हैं और जल साफ करने की मणि ही श्रद्धा है। जैसे मणि डालते ही जल का मैल कट जाता है, वैसे ही श्रद्धा के आते ही बाधाएं हटकर चित्त स्वच्छ एवं प्रसन्न हो जाता है।''

राजा ने पूछा, ''पर मन में महती आकांक्षा पैदा कर देना श्रद्धा की पहचान कैसे हो सकती है ?

भदंत नागसेन ने बताया, ''साधकगण दूसरे संतों के चित्त को मुक्त, सत्यशील अथवा अर्हत-मार्ग पर आरूढ देखकर, स्वयं भी उस उत्तम पद को पाने की आकांक्षा करते हैं अर्थात् अप्राप्त पदी की प्राप्ति के लिए प्रयत्न एवं परिश्रम करते हैं। महाराज! इसीलिए मन में महती आकांक्षा पैदा कर देना भी श्रद्धा की पहचान समझना चाहिए।''

''भंते! इसे और स्पष्ट करें।''

''महाराज! जैसे पहाड़ के ऊपर खूब जोर से पानी बरसे, जिसके फलस्वरूप पर्वत की कंदराएं, गुफाएं, नाले आदि जल से भर जाएं और नदी भी भरकर अपने दोनों तट को तोड़ती हुई आगे बढ़े। उसी समय यदि मनुष्यों की एक टोली नदी की गहराई न जानने के कारण उसके किनारे ही बैठी रहे ओर कोई अन्य व्यक्ति निडर हो, अपने आत्मबल से तैरकर नदी को पार करे, फिर बाकी डरे हुए लोग भी उससे प्रेरणा पाकर पार जाने में सफल हों। तब वह मनुष्य मानो संत हैं और मनुष्यों की टोली मानो साधक हैं, जो संतों को मुक्त देखकर स्वयं भी उस पद को पाने की इच्छा और उसके लिए प्रयत्न करते हैं। तो मन में ऐसी आकांक्षा पैदा करना श्रद्धा की पहचान है।

कटुक वचन मत बोल रे

ब्रह्मभोज का नाम सुनकर तू यहां चला आया, मगर जानता नहीं कि मुफ्त में भोजन करना महापाप है ? इसके लिए तो कुछ न कुछ सेवा करनी चाहिए। आ, मैं तुझे काम देता हूं। देख वहां कुछ वेदज्ञ ब्राह्मण बैठे हैं, उनके लिए चंदन घिस दे।''- मठाधीश ने एक ओर बैठे एक ब्राह्मण से कुछ कड़े शब्दों में कहा। वह ब्राह्मण निर्धन प्रतीत हो रहा था। मठाधीश के शब्द उसे तीर की भांति चुभे। खिन्न मन से उसने चंदन घिसना शुरू किया।

चंदन घिसते-घिसते मन का ताप शमन करने के लिए वह राम-नाम जाप करने लगा। लेकिन जब उसका मनस्ताप शांत न हुआ, तो अनजाने ही राम-नाम के स्थान पर 'अग्निसूक्त' गुनगुनाने लगा। लगभग एक घण्टे में पर्याप्त चंदन तैयार हुआ और एक परिचारक उसे लेकर चला गया। युवक वहीं बैठा 'अग्निसूक्त' गुनगुनाता रहा।

उपस्थित विप्रों ने जब अपने मस्तक पर चंदन का लेप किया, तो अग्निदाह से वे तड़प उठे। सैकड़ों ब्राह्मणों को जलन से छटपटाते देख आतिथेय और ग्राम के मुखिया चिंतित हो उठे। बात मठाधीश के ध्यान में आयी। तुरंत युवक के पास जाकर उसने करबद्ध हो कहा, 'मान्यवर! अज्ञानवश मुझसे अपराध हो गया, कृपया क्षमा करें। मैंने आपको अकारण ही कष्ट दिया। कृपया अग्निदहन से अभिमंत्रित विप्रों का त्राण करें।''

युवक के ध्यान में बात आयी। उसने 'अग्निसूक्त' के स्थान पर 'वरुण सूक्त' का पाठ शुरू किया। इससे विप्रों के मस्तक पर लगा चंदन हिमजलवत् शीतलता प्रदान करने लगा। कृतार्थ हो मठाधीश ने युवक की चरण-वंदना की। ब्रह्मभोज निर्विघ्न संपन्न हो गया। तब ग्राम-प्रमुख ने युवक का परिचय प्राप्त कर उसके परिवार के भरण-पोषण की व्यवस्था की। यही युवक आगे चलकर मध्व-मठ के आचार्यपीठ पर आसीन हुआ और 'राघवेंद्राचार्य' नाम से प्रसिद्ध हुआ।

रजि. MPHIN/2003/11246 Postal Reg. ICD. (MP) 1106/2012-14

गोविभा 20 फरवरी, 2013

गोविज्ञान भारती की बैठक संपन्न

इन्दौर। गोविज्ञान भारती की साधारण सभा इन्दौर में श्री नरेंद्र दुबे की उपस्थिति में संपन्न हुई। बैठक में मुम्बई से गोविज्ञान भारती के उपाध्यक्ष श्री अमृत दोशी और डॉ.रसेंदु शुक्ल, इन्दौर से अभय भरकतिया और डॉ.पुष्पेंद्र दुबे शामिल हुए। सर्वधर्म प्रार्थना के साथ बैठक प्रारंभ हुई। श्री अमृत भाई ने पिछली बैठक की कार्रवाई का वाचन किया। साथ ही बैठक में लिए गए निर्णयों की कार्रवाई से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि झिंझूवाड़ा में श्री कांतिसेन श्रॉफ 'काका' के मार्गदर्शन में जल, जंगल, जमीन के लिए काम किया जा रहा है। तालाबों में पर्याप्त पानी है। श्री दोशी ने वर्ष 2011-12 के अंकेक्षित हिसाब की जानकारी दी। डॉ.पुष्पेंद्र दुबे ने गोविज्ञान संशोधन एवं विद्यालय के बारे में बताया। डॉ.दुबे ने जानकारी दी कि 'गोविभा' को दस वर्ष पूर्ण हो गए हैं। किसी भी विचार को लोगों के समर्थन से ही टिकाया और बढ़ाया जा सकता है। इसके लिए गोविभा के आजीवन सदस्य बनाना चाहिए। बैठक में उपस्थितों ने आजीवन सदस्यता निधि 1000 रुपये रखने का सुझाव दिया, जिसे सभी ने स्वीकार किया। श्री अभय भरकतिया ने कहा कि जहां-जहां सब्सिडी कम होगी, वहां-वहां गाय और बैल का उपयोग बढ़ेगा। वर्ष 2013-14 की कार्य योजना भी प्रस्तुत की गई। श्री दोशी ने इलाहबाद कुंभ की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि गोरक्षा के विचार का कुंभ में काफी प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। समाचार पत्रों में भी पर्याप्त स्थान इस विचार को मिला है। उन्होंने वहां पर प्रमुख शंकराचार्य से भी भेंट की। कुंभ में सर्वश्री अलख भाई आज्ञाराम भाई और अनेक साथी प्रचार कार्य में लगे हुए हैं। अंत में पारस्परिक धन्यवाद के साथ बैठक संपन्न हुई। दूसरे दिन श्री अमृत भाई, डॉ.रसेंदु शुक्ला, श्री नरेंद्र दुबे और डॉ.पुष्पेंद्र दुबे सर्वोदय शिक्षण समिति माचला के भ्रमण पर गए। वहां की गतिविधियों का अवलोकन किया।

खादी-सभा 16-17 मार्च को सेवाग्राम में

खादी मिशन के तत्वावधान में खादी-सभा 16-17 मार्च 2013 को सेवाग्राम में आयोजित की गई है। संयोजक बालविजयजी ने बताया कि खादी-सभा 16 मार्च को सुबह 11 बजे प्रारंभ होकर 17 मार्च को दोपहर 1:30 बजे तक चलेगी। इसमें देशभर के कत्तिन, बुनकर, कारीगर, कार्यकर्ता और अन्य खादी प्रेमी सम्मिलित हो सकते हैं। खादी सभा में निम्नलिखित विषयों पर विचार किया जाएगा :

1. खादी रक्षा अभियान की अब तक की जानकारी एवं भविष्य के कार्यक्रम के संबंध में विचार
2. खादी ग्रामोद्योग आयोग/भारत सरकार की खादी ग्रामोद्योग संस्थाओं के प्रति नीतियों-निर्णयों को देखते हुए स्वावलंबन आधारित संस्था कार्य चलाने के संबंध में विचार।
3. खादी मिशन हेतु कार्पस फण्ड एकत्रित करने के संबंध में प्रदेशवार निर्धारित करने के संबंध में विचार।
4. संयोजक के आदेशानुसार अन्य विषयों पर विचार।

इसमें पहुंचने वाले साथीगण अपनी सूचना खादी मिशन के गोपुरी वर्धा स्थित कार्यालय पर भेजें। खादी मिशन के कार्य-संचालन हेतु खादी-सभा के अवसर पर देश की खादी ग्रामोद्योग संस्थाओं की ओर से प्रतिवर्ष आर्थिक सहयोग प्रदान किया जाता है। सहयोग राशि का ड्राफ्ट 'खादी-मिशन सेवा ट्रस्ट' के नाम पर वर्धा के किसी भी बैंक शाखा का भेजें।

ठाकुरदास बंग का निधन

स्वतंत्रता सेनानी और गांधीवादी विचारक अर्थशास्त्री डॉ.ठाकुरदास बंग का 27 जनवरी को निधन हो गया। उन्होंने युवावस्था में ही गांधी विचारों को आत्मसात् कर लिया था। अपना पूरी जीवन उन्होंने गांधी विचारों के लिए समर्पित किया। उनकी सेवाओं के लिए उन्हें जमनालाल बजाज पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जिसकी पूरी राशि उन्होंने सेवाभावी संस्थाओं को दे दी। उनके जाने से सर्वोदय समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। ऐसे निष्काम सेवक को गोविभा परिवार की हार्दिक श्रद्धांजलि।

प्रकाशक :
नरेन्द्र दुबे, कार्याध्यक्ष, गोविज्ञान भारती
द्वारा मुंबई सर्वोदय मण्डल, 299, ताड़देव रोड, नानाचौक
मुंबई-400 007, फोन : (022) 23872061

डी-37, सुदामा नगर, इन्दौर-452 009
फोन : 0731-2489475, मो.: 97542 20781
www.govigyan.org ● e-mail : vinobaji1@gmail.com
prof.pushpendra@gmail.com

मुद्रण : श्रीकृति ग्राफिक्स, बी-133, सुदामानगर, इन्दौर
मो.: 98269 51703

वार्षिक शुल्क : रु. 50 एक प्रति : रु. 5

गोविभा

रजि. MPHIN/2003/11246
पोस्टल रजि.आई.सी.डी. (एम.पी.) 1106/12-14

सेवा में,